Krishna Nand B.A III Hons ①

1

Q:- Define Sampling. Explain the different types of Sampling.

Ans:- मनोवैज्ञानिक शोध अध्ययन कार्य में प्रतिचयन या प्रतिदर्श (Sampling) का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी अध्ययन के लिए पूरी जनसंख्या का अध्ययन करना न तो व्यवहारिक है और न ही संभव भी नहीं है। फलत: पूरी जनसंख्या के प्रतिनिधि के रूप में एक अंश का चयन कर उसका अध्ययन किया जाता है। पूरी जनसंख्या के इसी प्रतिनिधि अंश को प्रतिदर्श या प्रतिचयन (Sampling) कहा जाता है।

प्रतिदर्श को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्पष्ट करने के लिए परिभाषित करने का प्रयास किया गया है जिनमें से निम्नांकित परिभाषाएं प्रमुख है—

(1) प्रसिद्ध शिक्षा मनोवैज्ञानिक वर्मा (1965) के द्वारा प्रतिचयन को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि— " प्राय: शोध की सभी ~~[illegible]~~ सांख्यकीय कार्य के लिए प्रतिचयन एक तकनीकी कार्य है। प्रतिचयन शोध-प्रणाली का एक अंश है और अब इसने एक तकनीकी कार्य की प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है। "

Krishna Nand B.A III Hons (2)

2 Sampling

(ii) शोध मनोविज्ञानी डेमिंग द्वारा प्रतिचयन को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि "प्रतिचयन या प्रतिदर्शन मात्र सम्पूर्ण के कुछ भागों को समाहित करना नहीं है। प्रतिचयन एक कला और विज्ञान है जिसकी सहायता से उपयोगी सांख्यिकीय सूचनाओं की विश्वसनीयता का संभाव्यता सिद्धान्त के द्वारा नियंत्रण तथा मापन किया जा सकता है।"

(iii) प्रसिद्ध शोध-रीति- मनोवैज्ञानिक करलिंगर (1964) द्वारा प्रतिचयन को संक्षिप्त रूप में और सटीक रूप से परिभाषित किया गया है। इस परिभाषा को मनोविज्ञानियों द्वारा सर्वमान्य किया गया है। इनके अनुसार - "किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधि स्वरूप एक अंश का चुन लेने को प्रतिचयन (sampling) कहते है।

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन से प्रतिचयन (sampling) का अर्थ निम्नवत स्पष्ट होता है -

(i) प्रतिचयन वैज्ञानिक पद्धति द्वारा किसी जनसंख्या या समष्टि (Population) के गुण या विशेषता से उसके एक छोटे भाग का प्रतिनिधि अंश का चुनाव है।

(ii) चयनित अंश या भाग में सम्पूर्ण जनसंख्या

Krishna Nand B.A III Hā'g (3)
3 Sampling

का प्रतिनिधित्व गुण पाया जाता है। अर्थात प्रतिदर्श मात्र सम्पूर्ण जनसंख्या (population) के किसी अंश का चयन मात्र नहीं है।

प्रतिचयन या प्रतिदर्शन (Sampling) के प्रकार —— (Types of Sampling)

मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में आज कल सांख्यिकीय पद्धतियों (Statistical methods) का प्रयोग आवश्यक हो गया है। ~~सांख्यिकीय~~ किसी भी अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए आँकड़ों की आवश्यकता होती है। ये आँकड़े प्रतिचयन या प्रतिदर्शन के आधार पर प्राप्त होते हैं। वर्तमान सांख्यिकीय पद्धतियों के विकास से प्रतिदर्शन या प्रतिचयन (Sampling) का प्रकार बहुत हद तक तकनीकि कार्य हो गया है। फलतः प्रतिचयन के प्रकारों में काफी भिन्नता पाई जाती है।

अन्य व्यवहारपरक शोधों के समान मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए प्रतिचयन या प्रतिदर्शन (Sampling) को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है। क्योंकि मनोविज्ञान भी एक व्यवहारपरक विज्ञान है।

(A) संभाव्य प्रतिदर्शन (Probability sampling)

(B) असंभाव्य प्रतिदर्शन (Non-Probability sampling)